



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)
PART II—Section 3—Sub-section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1162]
No. 1162]

नई दिल्ली, बुधवार, अगस्त 13, 2008/आषाढ 22, 1930
NEW DELHI, WEDNESDAY, AUGUST 13, 2008/SRAVANA 22, 1930

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

(केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 अगस्त, 2008

सं. 100/2008-सीमा शुल्क (न. टै.)

का.आ. 2041(अ).—सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 (1975 का 51) की धारा 5 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार, एतद्वारा, निम्नलिखित नियमावली बनाती है, नामशः :—

1. संक्षिप्त शीर्षक और प्रारंभ:—

(1) इन नियमों को सीमा शुल्क टैरिफ (कम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त टैरिफ अधिमानता योजना के अंतर्गत उत्पादों की उत्पत्ति का निर्धारण) नियमावली, 2008 कहा जाएगा।

(2) ये नियम अपने प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. उत्पत्ति का निर्धारण :—

किसी भी उत्पाद को लाभार्थी देश में उत्पन्न तब तक नहीं माना जाएगा, जब तक लाभार्थी देश द्वारा कम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त टैरिफ अधिमानता योजना (जिसे इसके बाद कथित योजना कहा जाएगा) के अंतर्गत उत्पत्ति का प्रमाणपत्र जारी करने वाला सरकारी प्राधिकरण इस बात से संतुष्ट न हो जाए कि इन उत्पादों के संबंध में इन नियमों में विनिर्दिष्ट शर्तों का पालन किया गया है।

3. आयात के समय दावा:—

आयात के समय उत्पाद का आयातकर्ता :—

- (क) एक दावा करेगा कि उत्पाद उस लाभार्थी देश के उत्पादन या विनिर्माण हैं जहां से उन्हें आयात किया गया है और ऐसे उत्पाद टैरिफ अधिमानताओं के लिए पात्र हैं, और
(ख) इन नियमों में विनिर्दिष्ट साक्ष्य प्रस्तुत करेगा।

नियम 4. उत्पन्न होने वाले उत्पाद:-

कथित योजना द्वारा कवर ऐसे उत्पाद जिन्हें किसी लाभार्थी देश से भारत में आयात किया जाता है, जो इस नियम 7 के अर्थों के अंतर्गत सीधे पारेषित किए जाते हैं, वे यदि निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करते हैं नामश:-

- (क) निर्यातकर्ता लाभार्थी देश में पूर्णतः उत्पादित या प्राप्त उत्पाद; या
(ख) वह उत्पाद निर्यातकर्ता लाभार्थी देश में पूर्णतः उत्पादित या प्राप्त नहीं है बशर्ते वह नियम 5 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट शर्तों को पूरा करता है।

स्पष्टीकरण:- इस नियम के उद्देश्य के लिए, निर्यातकर्ता लाभानुभोगी देश में पूर्णतया उत्पादित या प्राप्त उत्पाद से अभिप्राय है:-

- (क) कच्चे या खनिज उत्पाद जिसमें खनिज ईंधन, लुब्रिकेंट्स एवं संबद्ध सामग्री के साथ-साथ उसके भू-भाग से निकाले गए खनिज या खनिज अयस्क शामिल हैं;
(ख) कृषि, वनस्पति एवं वन्य उत्पादों सहित वहां उगाए या लावनी किए गए पादप या पापद उत्पाद;
(ग) वहां पैदा हुए और पाले गए जीवित पशु
(घ) उपर्युक्त खण्ड (ग) में संदर्भित पशुओं से प्राप्त उत्पाद;
(ङ) शिकार करने, फंसाने, मछली पकड़ने या वहां संचालित जलकृषि से प्राप्त उत्पाद;
(च) समुद्र में मछली पकड़ने से प्राप्त और अन्य समुद्री उत्पाद जिसे उसके तटीय जलक्षेत्र एवं एकांतिक आर्थिक क्षेत्र के बाहर से किसी पंजीकृत पोत जिस पर लाभार्थी देश का झण्डा लगाकर प्राप्त किया गया हो;
(छ) उपर्युक्त (च) में संदर्भित उत्पादों से एकांतिक रूप से इसके कारखाना जहाजों पर विदेशों में प्रसंस्कृत और/या बनाए गए उत्पाद;
(ज) वहां संचालित विनिर्माण या प्रसंस्करण कार्यों से उत्पन्न स्ट्रैप एवं कचरे जो केवल निपटाने या कच्चे माल निकालने के उपयुक्त हो;
(झ) वहां इकट्ठे किए गए प्रयुक्त सामान जो अब अपना मूल उद्देश्य निष्पादित नहीं कर सकते और न ही उन्हें सुधारा जा सकता है या उनकी मरम्मत ही की जा सकती है और वे सिर्फ निपटाने या पुर्जें अथवा कच्चा माल अलग करने के योग्य हों;

(अ) उसके भू-भाग से परे समुद्र तल, अपमृदा या समुद्र की सतह से लिए गए उत्पाद बशर्ते लाभार्थी देश के पास समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के प्रावधानों के अनुरूप उस समुद्र तल, अपमृदा या समुद्र की सतह का दोहन करने का अधिकार हो;

(ट) एकांतिक रूप से उपर्युक्त खंड (क) से खंड (अ) में संदर्भित उत्पादों से उत्पादित उत्पाद

5. ऐसे उत्पाद जो न तो पूरी तरह उत्पादित हैं और न ही प्राप्त किये गये हैं.- नियम 4 के उद्देश्य से और नियम 6 के प्रावधानों के अधीन ऐसे उत्पादों के लिए, जो कि न तो पूरी तरह उत्पादित हैं और न ही प्राप्त किये गये हैं, यह माना जायेगा कि उनका उद्भव निर्यात करने वाले लाभानुभोगी देश में हुआ है, बशर्ते वे निम्नलिखित शर्तों को पूरा करते हों:-

(i) निर्यात-उत्पाद के विनिर्माण में प्रयोग किये जाने वाले गैर उद्भूत पदार्थों, कलपुर्जों या उत्पाद का कुल मूल्य इस प्रकार उत्पादित या प्राप्त किये गये के कुल एफ ओ बी मूल्य के 70 प्रतिशत से अधिक न हो (लाभानुभोगी देश में संवर्धित स्थानीय मूल्य अवयव कम से कम 30 प्रतिशत हो);

(ii) इस प्रकार उत्पादित या प्राप्त किये गये उत्पाद को एक ऐसे शीर्ष (हार्मोनाइज्ड सिस्टम के चार अंकीय स्तर पर) में वर्गीकृत किया गया हो जो उस शीर्ष से भिन्न होता है जिसके अंतर्गत इसके विनिर्माण में प्रयोग किये जाने वाले गैर उद्भूत पदार्थों को वर्गीकृत किया जाता है (चेंज इन टैरिफ हेडिंग रूल); और

(iii) विनिर्माण की अंतिम प्रक्रिया निर्यात करने वाले लाभानुभोगी देश के भू-क्षेत्र में पूरी की गई हो।

व्याख्या

(क) स्थानीय मूल्य संवर्धित अवयव की गणना के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया जायेगा -

स्थानीय मूल्यवर्धित अवयव (x%)

$$= \frac{\text{एफ ओ बी मूल्य- गैर उद्भूत माल का मूल्य}}{\text{एफ ओ बी मूल्य}} \times 100$$

(उद्भूत मूल्य की अर्हता के लिए उत्पाद हेतु $x \geq 30\%$)

(ख) गैर उद्भूत पदार्थ, कलपुर्ज या उत्पाद या अनिश्चित उद्भूत माल का मूल्य

(i) पदार्थ, कलपुर्ज या उत्पाद के आयात के समय सी आई एफ मूल्य होगा, जहाँ कि इनको सिद्ध किया जा सकता है; या

(ii) सबसे पहले का वह विनिश्चित मूल्य होगा जो कि ऐसे लाभानुभोगी के भू-क्षेत्र में पदार्थ, कल पुर्ज या अनिश्चित -उद्भूत उत्पाद के लिए भुगतान किया गया है जहाँ पर कि कार्य या प्रक्रिया को पूरा किया गया है।

(ग) यदि अंतिम रूप से तैयार निर्यात उत्पाद के विनिर्माण में भारत में उद्भूत पदार्थ का आदान के रूप में प्रयोग किया जाता है तो ऐसे आदान का मूल्य भी स्थानीय मूल्य वर्धित अवयव की गणना में शामिल किया जायेगा, क्योंकि इसके लिये यह माना जायेगा कि यह निर्यात करने वाले लाभानुभोगी देश में उद्भूत हुआ है।

6. अपर्याप्त प्रचालन.-

उद्भूत स्तर प्रदान करने के लिए निम्नलिखित प्रचालनों को किसी भी घटना में अपर्याप्त कार्य या प्रक्रिया माना जायेगा:-

(क) परिवहन और भण्डारण के दौरान उत्पादों के अच्छी स्थिति में सुरक्षित रखने के लिए किये जाने वाले प्रचालन (जैसे कि ड्राईंग, फ्रीजिंग, ब्राइज में रखना, वेन्टिलेशन, स्प्रेडिंग आउट, चिलिंग, नमक, सल्फर डाई आक्साइड या अन्य जलीय विलयन में रखना, खराब हिस्से को बाहर करना और इसी प्रकार के अन्य कार्य)

(ख) सामान्य प्रचालन, जिसमें धूल को हटाना, सिफ्टिंग या स्क्रीनिंग, छटनी, वर्गीकरण मैचिंग (वस्तुओं का सेट तैयार करना) धुलाई, पेन्टिंग, कटिंग;

(ग) खेपों की पैकिंग को बदलना, अलग-अलग करना और उनकी एसेम्बलिंग करना

(घ) साधारण कटाई, स्लाइसिंग और पुनः पैकिंग या बाटलों में, फ्लास्क में, बैगों व बक्सों में भरना, कार्ड या बोर्ड लगाना और अन्य साधारण पैकिंग कार्य ।

(ङ.) उत्पादों और उनकी पैकेजिंग पर मार्क्स, लेबल्स और अन्य प्रकार के पहचान वाले संकेत लगाना

(च) जहाँ मिश्रण का एक या एक से अधिक घटक इन नियमों में विनिर्दिष्ट शर्तों को पूरा नहीं करता है, वहाँ उत्पादों का साधारण सम्मिश्रण तैयार करना चाहे वे अलग-अलग प्रकार के हों या नहीं जिससे कि उनको मूल उत्पाद माना जा सके ।

(छ) पूर्ण उत्पाद बनाने के लिए उत्पादों के हिस्सों का संयोजन और/या उत्पादों के हिस्सों को अलग-अलग करना और/या उन्हें पैक करना;

(ज) पशुओं का वध;

(झ) जल या किसी अन्य पदार्थ में उत्पाद को केवल घोलना या मिलाना जिससे इस प्रकार प्राप्त उत्पाद की विशेषताओं पर कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ता हो; और

(ञ) पैराग्राफ (क) से (झ) में दिए गए दो या इससे अधिक प्रचालन ।

7. प्रत्यक्ष पारेषण-एक उत्पाद, उस उत्पाद को, जिनके संबंध में टैरिफ अधिमानों का दावा किया गया है, को निर्यातक लाभान्वित देश से सीधे पारेषित माना जाएगा;

- (क) यदि इनका परिवहन किसी अन्य देश के क्षेत्र के रास्ते नहीं किया गया हो;
- (ख) यदि इन उत्पादों जहाँ इनका परिवहन एक या उससे अधिक मध्यवर्ती देशों के रास्ते ऐसे देशों में यातायात या अस्थायी भण्डारण के साथ या इसके बिना किया गया हो बशर्ते कि:
- (i) उनका पारगमन प्रवेश भौगोलिक कारणों परिवहन अपेक्षाओं से अनन्य रूप से संबंधित अन्य दृष्टिकोणों से न्यायोचित हो;
- (ii) इन उत्पादों ने वहाँ व्यापार या खपत में प्रवेश नहीं किया हो;
- (iii) ये उत्पाद उतराई और पुनः लदान या इन्हें अच्छी स्थिति में रखने के लिए अपेक्षित किसी प्रचालन के अलावा किसी प्रचालन से नहीं गुजरे हो; और
- (iv) ये उत्पाद पारगमन के देश में सीमाशुल्क नियंत्रण के अधीन रहे हों ।

8. पैकिंग संबंधी व्यवहार.-

- (i) सुमेलित प्रणाली के सामान्य नियम 5 के अनुसार पैक किए गए उत्पादों के साथ वर्गीकृत करते समय, खुदरा बिक्री के लिए पैकेजों तथा पैकिंग सामग्रियों/डिब्बों/कंटेनरों पर इस बात पर विचार करने के लिए ध्यान नहीं दिया जाएगा कि क्या पैकेज तथा पैकिंग सामग्रियों/डिब्बों/कंटेनर उक्त उत्पाद के टैरिफ वर्गीकरण में परिवर्तन हेतु संगत मापदंडों को पूरा करते हैं ।
- (ii) यदि उत्पाद यथा मूल्यानुसार प्रतिशत मापदंड के अधीन है तो खुदरा बिक्री के लिए पैकेजों तथा पैकिंग सामग्रियों/डिब्बों/कंटेनर के मूल्य पर, यदि सीमाशुल्क प्रयोजनों हेतु इन्हें विचारधीन उत्पादों के समानु रूप माना जाता है तो इन पर उद्गम के निर्धारण में विचार किया जाएगा ।
- (iii) किसी उत्पाद के उद्गम के निर्धारण हेतु उत्पाद के परिवहन में अनन्य रूप से प्रयुक्त कंटेनरों और पैकेजिंग सामग्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

9. उद्गम प्रमाण-पत्र.- अधिमानों रियायतों के लिए पात्र उत्पाद निर्यातक लाभान्वित देश द्वारा निर्दिष्ट सरकारी प्राधिकारी द्वारा जारी संलग्नक-क में प्रपत्र के अनुसार उद्गम प्रमाणपत्र द्वारा समर्थित होगा एवं संलग्नक-ख में विहित प्रक्रियाओं के अनुसार सीमा शुल्क प्राधिकारियों को प्रस्तुत किया जाएगा।

[फा. सं. 467/43/2006-सीमा शुल्क-V]

असीम कुमार, अवर सचिव

संलग्नक -क

उद्गम प्रमाण-पत्र

1. से परेषित (निर्यातक का व्यावसायिक नाम, पता, देश)		संदर्भ सं०			
		डीएफटीपी - एलडीसी स्कीम (संयुक्त घोषणा और प्रमाण पत्र)			
	 में जारी किया गया (देश) (पिछले पृष्ठ पर दी गई टिप्पणी देखें)			
2. को परेषित (परेषिती का नाम, पता, देश)		4. सरकारी प्रयोग हेतु			
3. परिवहन का साधन एवं मार्ग (जहाँ तक ज्ञात हो)					
5. सुमेलित पद्धति कूट (एचएस) कोड	6. पैकेजों के चिह्न एवं संख्याएं	7. पैकेजों की संख्या एवं प्रकार वस्तुओं का विवरण	8. उद्गम मापदण्ड (पिछले पृष्ठ पर टिप्पणी देखें)	9. कुल भार या अन्य मात्रा	10. बीजक की संख्या एवं तारीख

<p>11. निर्यातक द्वारा घोषणा</p> <p>अधोहस्ताक्षरी एतद्वारा यह घोषणा करता है कि उपर्युक्त ब्यौरे एवं विवरण सही है; यह कि सभी वस्तुएं</p> <p>.....</p> <p>(देश)</p> <p>में उत्पादित हैं और अल्पतम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता स्कीम में इन वस्तुओं के लिए विनिर्दिष्ट उद्गम संबंधी अपेक्षाओं के अनुरूप हैं</p> <p>.....</p> <p>(आयातक देश)</p> <p>स्थान एवं तारीख, प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता के हस्ताक्षर</p>	<p>12. प्रमाण पत्र</p> <p>की गई जाँच के आधार पर एतद्वारा यह प्रमाणित किया जाता है कि निर्यातक द्वारा की गई घोषणा सही है।</p> <p>.....</p> <p>स्थान एवं तारीख, प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता के हस्ताक्षर एवं मुहर</p>
---	---

टिप्पणी

I. अधिमानता के लिए पात्रता हेतु उत्पाद को:

- (क) इस स्कीम के अंतर्गत भारत में रियायतों के लिए पात्र उत्पादों के विवरण के अंतर्गत आना चाहिए।
- (ख) अल्पतम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता योजना के लिए उद्भव सम्बंधी नियमों का अनुपालन होना चाहिए। किसी परेषण के प्रत्येक उत्पाद को अपने तारीख से पृथक रूप से उद्भूत होना चाहिए; और
- (ग) अल्पतम विकसित देशों के लिये शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता योजना में उद्भव सम्बंधी नियमों में विनिर्दिष्ट परेषण सम्बंधी शर्तों का अनुपालन होना चाहिए।

II. बाक्स 8 में की जाने वाली प्रविष्टियाँ:-

- (क) अल्पतम विकसित देशों के लिये शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता सम्बंधी उद्भव नियमों के नियम 4 के अनुसार अधिमानता सम्बंधी उत्पाद पूर्णतया निर्यातकर्ता लाभानुभोगी देश में उत्पादित या प्राप्त हुआ होना चाहिए या जहाँ ये निर्यातक लाभानुभोगी देश में पूर्णतः उत्पादित या प्राप्त नहीं है वहाँ उन्हें नियम-5 के अंतर्गत पत्रता पूरी करना चाहिए।

(ख) पूर्णतः उत्पादित या प्राप्त उत्पाद के लिए -बाक्स 8 में "क" लिखें।

(ग) ऐसे उत्पाद जो न तो पूर्णतया उत्पादित हैं और न पूर्णतया प्राप्त हैं- उन उत्पादों के लिए बाक्स 8 में 'ख' अक्षर लिखें जो नियम 5 के अनुसार उद्भव सम्बंधी मानदण्डों को पूरा करते हैं। अक्षर 'ख' की प्रविष्टि के बाद, नियम 5 के अंतर्गत की गई गणना के अनुसार स्थानीय बर्द्धित मूल्य अवयव का प्रतिशत भी लिखो (उदाहरणार्थ ख(--)) प्रतिशत)

संलग्नक - ख

अल्पतम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता स्कीम के अंतर्गत प्रमाण पत्र को जारी करने और उसको प्रस्तुत करने से सम्बन्धित प्रक्रिया

अल्पतम विकसित देशों के लिए शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता स्कीम हेतु उद्गम संबंधी नियमों के कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ उद्गम प्रमाण-पत्र जारी करने और उसके प्रस्तुत करने और अन्य संबंधित प्रशासनिक मामलों के संबंध में निम्नांकित प्रक्रियाओं का पालन किया जाएगा:

प्राधिकारी

1. उद्गम प्रमाण-पत्र निर्यातक लाभानुभोगी देश की सरकार द्वारा नामित सरकारी प्राधिकारियों द्वारा जारी किया जाएगा (जिन्हें एतद् पश्चात् 'जारीकर्ता प्राधिकारी' कहा गया है)

उद्गम प्रमाण-पत्र जारी करना

2. उद्गम प्रमाण पत्र ए 4 आकार के कागज पर और अंग्रेजी में संलग्नक-क में यथा प्रदर्शित नमूने के अनुसार होना चाहिए।
3. उद्गम प्रमाण पत्र निम्नलिखित रंगों में एक मूल प्रति और तीन अन्य प्रतियों में होना चाहिए।

मूल प्रति	-	नीला
दूसरी प्रति	-	सफेद
तीसरी प्रति	-	सफेद
चौथी प्रति	-	सफेद

4. प्रत्येक उद्गम प्रमाण पत्र पर इसे जारी किए जाने के प्रत्येक स्थान या कार्यालय द्वारा अलग से दी गई संदर्भ संख्या अंकित होनी चाहिए।

5. जारीकर्ता प्राधिकारी दूसरी प्रति अपने पास रखकर मूल प्रति तथा शेष दो प्रतियाँ निर्यातक को देगा। निर्यातक द्वारा आयात के पत्तन अथवा स्थान पर सीमाशुल्क प्राधिकरण के समक्ष मूल प्रति प्रस्तुत करने के लिए तीसरी प्रति के साथ मूल प्रति आयातक को भेजनी होगी। तीसरी प्रति आयातक द्वारा रखी जाएगी और चौथी प्रति निर्यातक रखेगा।

उपबंधों का कार्यान्वयन

6. स्कीम के उद्गम संबंधी नियमों के उपबंधों के कार्यान्वयन हेतु निर्यातक देश में जारीकर्ता प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए उद्गम प्रमाण पत्र में संगत नियम तथा लागू मानदंड बॉक्स 8 में इंगित किए जाएंगे।
7. उद्गम प्रमाण पत्र में किसी विलोपन या अध्यारोपण की अनुमति नहीं होगी। इसमें कोई परिवर्तन त्रुटिपूर्ण सामग्री को काटकर और किसी अपेक्षित सामग्री को जोड़कर किया जाएगा। ऐसे परिवर्तन उद्गम प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर के लिए प्राधिकृत अधिकारी द्वारा अनुमोदित तथा जारीकर्ता प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित होंगे। अप्रयुक्त स्थानों को काट दिया जाएगा ताकि बाद में कुछ जोड़ा न जा सके।
8. जब भी निर्यात किए जाने वाले उत्पादों को स्कीम के लिए उद्गम के नियमों के अर्थ के भीतर उस देश में उद्भूत समझा जाएगा तो उद्गम प्रमाण पत्र निर्यातक देश के संगत जारीकर्ता प्राधिकारी द्वारा निर्यात के समय या पोतलदान की तारीख से 3 कार्यदिवसों के भीतर जारी कर दिए जाएंगे।
9. ऐसे आपवादिक मामलों में जहाँ अवांछित गलतियों या विलोपन या अन्य वैध कारणों के कारण निर्यात के समय या पोतलदान की तारीख से 3 कार्यदिवसों के भीतर उद्गम प्रमाण पत्र जारी नहीं किया गया है, वहीं उद्गम प्रमाण पत्र पोतलदान की तारीख से 45 दिनों से पूर्व भूतलक्षी प्रभाव से जारी किया जा सकता है और इस पर भूतलक्षी प्रभाव से जारी लिखा होना चाहिए।
10. उद्गम प्रमाण पत्र की चोरी होने, इसके खो जाने या नष्ट हो जाने पर निर्यातक इसे जारीकर्ता प्राधिकारी को उनके पास उपलब्ध निर्यात दस्तावेजों के आधार पर मूल प्रति की एक प्रमाणित सत्य प्रतिलिपि और तीसरी प्रति के लिए लिखित में आवेदन कर सकता है जिस पर उद्गम प्रमाण पत्र के बॉक्स 12 में 'प्रमाणित सत्य प्रतिलिपि' (मूल प्रमाण पत्र की एवज में) शब्द लिखे होंगे। इस प्रति पर मूल उद्गम प्रमाण पत्र की तारीख अंकित होगी। उद्गम प्रमाण पत्र की प्रमाणित सत्य प्रतिलिपि मूल उद्गम प्रमाण पत्र की वैधता अवधि के भीतर और इस शर्त पर कि निर्यातक ने संगत जारीकर्ता प्राधिकारी को चौथी प्रति उपलब्ध कराई है, जारी किया जाएगा। उद्गम प्रमाण पत्र की प्रमाणित सत्य प्रतिलिपि की वैधता इस प्रकार जारी मूल प्रमाण पत्र के समान होगी।

आयात के समय प्रस्तुतीकरण

11. मूल उद्गम प्रमाण पत्र संबंधित उत्पादों के लिए आयात प्रवेश दर्ज कराते समय सीमाशुल्क प्राधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा ।
12. प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने में निम्नलिखित समय सीमा का पालन किया जाएगा ।
 - (क) उद्गम प्रमाण पत्र उसे जारी किए जाने की तारीख से बारह महीनों के लिए वैध होना चाहिए।
 - (ख) उद्गम प्रमाण पत्र सीमाशुल्क प्राधिकारी को उसकी वैधता अवधि के भीतर ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।
13. जहाँ उद्गम प्रमाण पत्र आयातक पक्षकार के संगत प्राधिकारी के समक्ष उद्गम प्रमाण पत्र की वैधता अवधि की समाप्ति के बाद प्रस्तुत किया जाता है, तो ऐसे प्रमाण पत्र को तब स्वीकार किया जाएगा यदि समय सीमा का पालन करने में हुई विफलता अपरिहार्य कारणों या ऐसे अन्य कारणों से हुई है जिन पर निर्यातक का कोई नियंत्रण नहीं है ।
14. सभी मामलों में भारत के संगत सीमाशुल्क प्राधिकारी ऐसे उद्गम प्रमाण-पत्र को स्वीकार कर सकते हैं बशर्ते कि उत्पादों का आयात उद्गम प्रमाण पत्र की वैधता अवधि की समाप्ति से पहले किए गए हों ।
15. आयात की निकासी के लिए औपचारिकताएं पूरी करने के प्रयोजनार्थ उद्गम प्रमाण पत्र में दिए गए विवरणों और भारत के सीमाशुल्क प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत दस्तावेजों के बीच मामूली असंगतता का पता चलने पर, उत्पादों को देखते हुए उद्गम प्रमाण पत्र को वस्तुतः अवैध नहीं माना जाएगा यदि वह उक्त उत्पादों से वास्तव में मेल खाता है ।
16. उन मामलों में जहाँ उद्गम प्रमाण पत्र भारत के सीमाशुल्क प्राधिकारियों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है, तो मूल उद्गम प्रमाण पत्र जारी करने वाले प्राधिकारी को समुचित परन्तु दो (2) माह से अनधिक अवधि के भीतर वापस लौटा दिया जाएगा । अधिमानी टैरिफ व्यवहार को अस्वीकार करने के आधारों की सूचना आयातक तथा जारीकर्ता प्राधिकारी को दे दी जाएगी ।

सत्यापन

17. यदि भारत के सीमाशुल्क प्राधिकारी को दस्तावेज की प्रामाणिकता अथवा प्रशंगत उत्पाद अथवा उसके कतिपय हिस्सों के सही मूल से संबंधित जानकारी की यथार्थता के बारे में कोई संदेह

हो तो वह उक्त शुल्क मुक्त तटकर अधिमानता में विनिर्दिष्ट प्रक्रिया के अनुसार अपने नामित नोडल एजेंसी के माध्यम से पूर्ण प्रभावी जांच करने का अनुरोध कर सकता है।

विशेष मामले

18. जब भारत में आगमन के पूर्व या उसके बाद किसी विनिर्दिष्ट पत्तन को निर्यातित समस्त उत्पादों या उनमें से कुछ उत्पादों के गंतव्य में परिवर्तन हो तो निम्नलिखित नियमों का पालन किया जाएगा :-

(क) यदि विनिर्दिष्ट आयातक पत्तन पर सीमाशुल्क प्राधिकरण को उत्पाद प्रस्तुत किया जा चुका हो तो आयातक के लिखित आवेदन से उद्गम संबंधी प्रमाण पत्र में उक्त प्राधिकारी द्वारा समस्त उत्पादों या उसके कुछ हिस्से के लिए इस आशय का पृष्ठांकन करके मूल प्रमाण पत्र आयातक को वापस कर दिया जाएगा।

(ख) यदि उद्गम के प्रमाण पत्र में विनिर्दिष्ट किए गए के अनुसार भारत को भेजे जाने के दौरान गंतव्य में परिवर्तन होता है तो निर्यातक जारी किए गए उद्गम संबंधी प्रमाण पत्र के साथ नए गंतव्य के लिए संबंधित सीमाशुल्क प्राधिकारी को लिखित आवेदन करेगा।

19. उद्गम संबंधी नियमों के नियम 7 के उपबंधों के कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ आयात के समय भारत के सीमाशुल्क प्राधिकारी को निम्नलिखित दस्तावेज प्रस्तुत किए जाएंगे :-

- (क) निर्यातक देश द्वारा जारी किया गया सम्पूर्ण लदान पत्र;
- (ख) निर्यातक लाभानुभोगी देश के जारीकर्ता प्राधिकारी द्वारा जारी उद्गम संबंधी प्रमाण पत्र;
- (ग) उत्पाद के संबंध में मूल वाणिज्यिक बीजक की प्रति; और
- (घ) इस तथ्य के साक्ष्य में समर्थनकारी दस्तावेज कि नियम 7 की अन्य अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है।

MINISTRY OF FINANCE**(Department of Revenue)****(CENTRAL BOARD OF EXCISE AND CUSTOMS)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 13th August, 2008

S.O. 2041(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5 of the Customs Tariff Act, 1975 (51 of 1975), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

1. Short title and commencement.— (1) These rules may be called the Customs Tariff [Determination of Origin of Products under the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries] Rules, 2008.

(2) These rules shall come into force from the date of their publication.

2. Determination of Origin.— No product shall be deemed to be originating in the beneficiary country unless the conditions specified in these rules are complied with in relation to such products, to the satisfaction of the Government Authority authorised by the exporting beneficiary country to issue the Certificate of Origin under the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries (hereinafter referred to as the said Scheme).

3. Claim at the time of importation.— The importer of the product shall, at the time of importation,—

(a) make a claim that the products are the produce or manufacture of the beneficiary country from where they are imported and such products are eligible for tariff preferences, and

(b) produce the evidence specified in these rules.

4. Originating products.— Products, covered by the said scheme, imported into India from a beneficiary country, which are consigned directly within the meaning of rule 7, shall be eligible for tariff preferences if they conform to the following origin requirements namely:—

(a) products wholly produced or obtained in the exporting beneficiary country; or

(b) products not wholly produced or obtained in the exporting beneficiary country, provided it fulfils the conditions specified under rule 5.

Explanation: For the purposes this rule, the products wholly produced or obtained in the exporting beneficiary country means,-

- (a) Raw or mineral products including mineral fuels, lubricants and related materials as well as mineral or metal ores extracted from its territory;
- (b) plant and plant products, including agriculture, vegetable and forestry products grown or harvested there;
- (c) live animals born and raised there;
- (d) products obtained from animals referred to in clause (c) above;
- (e) products obtained by hunting, trapping, fishing or aquaculture conducted there;
- (f) products of sea fishing and other marine products taken from outside its Territorial Waters and Exclusive Economic Zone by vessels registered and flying the flag of the beneficiary country ;
- (g) products processed and/or made on board its factory ships exclusively from products referred to in clause (f) above;
- (h) scrap and waste derived from manufacturing or processing operations conducted there and fit only for disposal or for the recovery of raw materials;
- (i) used articles collected there which can no longer perform their original purpose nor are capable of being restored or repaired and which are fit only for disposal or for the recovery of parts or raw materials;
- (j) products taken from the seabed, subsoil or ocean floor thereof beyond its territory, provided the beneficiary country has the rights to exploit that sea bed, subsoil or ocean floor thereof in accordance with the provisions of the United Nations Convention on the Law of the Sea;
- (k) products produced there exclusively from the products referred to in clauses (a) to (j) above.

5. Products not wholly produced or obtained.- For the purposes of rule 4 and subject to the provisions of rule 6, products not wholly produced or obtained shall be considered as originating in the exporting beneficiary country if they fulfil the following conditions:-

- (i) The total value of the non-originating materials, parts, or produce used in the manufacture of the export product does not exceed 70 per cent. of the Free on Board (FOB) value of the product so produced or obtained (i.e. the local value added content in the beneficiary country is at least 30 per cent.);
- (ii) the product so produced or obtained is classified in a Heading, (at 4-digit level of the Harmonised System) which is different from those in

- which all the non-originating materials used in its manufacture are classified (Change in Tariff Heading Rule); and
- (iii) the final process of manufacture is performed within the territory of the exporting beneficiary country.

Explanation: (a) For the purposes of calculating the "local value added content", the following formula shall be applied:-

Local Value Added Content (X %) =

$$\frac{\text{Free on Board (FOB) Price} - \text{Value of non-originating materials}}{\text{Free on Board (FOB) Price}} \times 100$$

(In order for a product to qualify as originating $X \geq 30\%$)

- (b) The value of the non-originating materials, parts, or produce or materials of undetermined origin shall be:
- (i) the Cost Insurance and Freight (CIF) value, at the time of importation of the materials, parts, or produce where this can be proven; or
 - (ii) the earliest ascertainable price paid for the materials, parts or produce of undetermined origin in the territory of the beneficiary where the working or processing takes place.
- (c) If in the manufacturing of the final export product, the originating material from India is used as input, the value of such input shall be included in the calculation of the local value added content as it would be deemed to be originating in the exporting beneficiary country.

6. Insufficient Operations.- The following operations shall in any event be considered insufficient working or processing to confer the originating status:-

- (a) operations to ensure the preservation of products in good condition during transport and storage (such as drying, freezing, keeping in brine, ventilation, spreading out, chilling, placing in salt, sulphur dioxide or other aqueous solutions, removal of damaged parts, and like operations);
- (b) simple operations consisting of removal of dust, sifting or screening, sorting, classifying, matching (including the making-up of sets of articles), washing, painting, cutting;
- (c) changes of packing and breaking up and assembly of consignments;
- (d) simple cutting, slicing and repacking or placing in bottles, flasks, bags, boxes, fixing on cards or boards, and all other simple packing operations;

- (e) affixing of marks, labels or other like distinguishing signs on products or their packaging;
- (f) simple mixing of products whether or not of different kinds, where one or more components of the mixture do not meet the conditions laid down in these rules to enable them to be considered as originating products;
- (g) simple assembly of parts of products to constitute a complete product and or disassembly of products into parts and/or packing thereof;
- (h) slaughter of animals;
- (i) mere dilution or mixing of products with water or another substance that does not materially alter the characteristics of the products so obtained; and
- (j) a combination of two or more operations referred to in paragraphs (a) to (i).

7. Direct consignment.- A product, in respect of which tariff preference is claimed, shall be considered as directly consigned from the exporting beneficiary country,-

- (a) if it has been transported without passing through the territory of any other country;
- (b) The product, whose transport involves transit through one or more intermediate countries with or without trans-shipment or temporary storage in such countries ;

Provided that,-

- (i) their transit entry is justified for geographical reasons or by considerations related exclusively to transport requirements;
- (ii) the products have not entered into trade or consumption there;
- (iii) the products have not undergone any operation other than unloading and reloading or any operation required to keep them in good condition; and
- (iv) the products have remained under the customs control in the country of transit.

8. Treatment of packing.-

- (i) The packages and packing materials or cases or containers for retail sale, when classified together with the packaged products, according to General rule 5 of the rules for interpretation of the Harmonised System, shall not be taken into account for considering whether packages and packing materials or cases or containers fulfil the criterion corresponding to a change of tariff classification of the said products.
- (ii) If the product is subject to an ad-valorem percentage criterion, the value of the packages and packing materials or cases or container for retail sale shall be

taken into account in its origin assessment, in case they are treated as being one for customs purposes with the products in question.

- (iii) The containers and packing materials exclusively used for the transport of a product shall not be taken into account for determining the origin of any products.

9. Certificate of Origin.- Products eligible for preferential concessions shall be supported by a Certificate of Origin as per the format in Annexure-A, issued by a Government authority designated by the exporting beneficiary country and presented to the Customs authorities in accordance with the Procedures as set out in Annexure-B.

[F. No. 467/43/2006-Cus. V]

ASEEM KUMAR, Under Secy.

Annexure-A

CERTIFICATE OF ORIGIN

1. Goods consigned from (Exporters' Business Name, Address, Country)		Reference No.			
		Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries (Combined declaration and certificate)			
2. Goods consigned to (Consignee's Name, Address, Country)		Issued in..... (Country)			
		(See notes overleaf)			
3. Means of transport and route (as far as known)		4. For Official use			
5. Harmonised System (HS) Code	6. Marks and numbers of packages	7. Number and kind of packages: description of goods	8. Origin criterion (see Notes overleaf)	9. Gross weight or other quantity	10. Number and date of invoice

<p>11. Declaration by the Exporter The undersigned hereby declares that the above details and statements are correct; That all the goods were produced in</p> <p>..... (Country)</p> <p>and that they comply with the origin requirements specified for those goods in Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries .</p> <p>..... (Importing Country)</p> <p>..... Place and date, signature of the authorised signatory</p>	<p>12. Certificate:</p> <p>It is hereby certified, on the basis of control carried out, that the declaration by the exporter is correct.</p> <p>..... Place and date, signature and stamp of certifying authority.</p>
--	---

NOTE

I. To qualify for preference, products must:

- (a) fall within a description of products eligible for concessions in India under this Scheme.
- (b) comply with Rules of Origin for the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries. Each product in a consignment must be originating separately in its own right; and
- (c) comply with the consignment conditions specified in the Rules of Origin for the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries .

II. Entries to be made in Box 8.- (a) Preference products must be wholly produced or obtained in the exporting beneficiary country in accordance with rule 4 of the Rules of Origin for the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries, or where not wholly produced or obtained in the exporting beneficiary country they must be eligible under rule 5.

(b) For products wholly produced or obtained - enter the letter 'A' in box 8.

(c) For products not wholly produced or obtained - enter the letter 'B' in box 8 for products, which meet the origin criterion according to rule 5. Entry of letter 'B' would be followed by the percentage of Local Value Added Content, as calculated under rule 5: (example B(--) per cent).

Annexure-B**PROCEDURE FOR ISSUANCE AND PRESENTATION OF CERTIFICATE OF ORIGIN UNDER THE DUTY FREE TARIFF PREFERENCE SCHEME FOR LEAST DEVELOPED COUNTRIES**

For the purpose of implementing the Rules of Origin for the Duty Free Tariff Preference Scheme for Least Developed Countries, the under-mentioned procedure on the issuance and presentation of the Certificate of Origin and other related administrative matters shall be followed:

Authorities

1. The certificate of origin issued by the Government authorities designated by the Government of the exporting Beneficiary country (hereinafter referred as "Issuing Authority") would only be accepted.

Issuance of Certificate of Origin

2. The certificate of origin shall be on A4 size paper, completed in English and in conformity to the specimen as shown in Annexure - 'A'.
3. The certificate of origin shall comprise of one original and three copies of the following colours:

Original -blue
Duplicate -white
Triplicate -white
Quadruplicate -white

4. Each certificate of origin shall bear a reference number separately given by each place or office of issuance.
5. The Issuing Authority while retaining the duplicate copy shall provide the original copy and remaining two copies to the exporter. The original copy together with the triplicate shall be forwarded by the exporter to the importer for submission of the original copy to the Customs Authority at the port or place of importation. The triplicate shall be retained by the importer and the quadruplicate shall be retained by the exporter.

Implementation of the provisions

6. The certificate of origin issued by the Issuing authority in the exporting country shall indicate the relevant rules and applicable criteria in Box 8.
7. Neither erasures nor superimpositions shall be allowed on the certificates of origin. Any alteration shall be made by striking out the erroneous materials and making any addition required. Such alterations shall be approved by an official authorized to sign the certificate of origin and certified by the Issuing authority. Unused spaces shall be crossed out to prevent any subsequent addition.

8. The certificate of origin shall be issued by the relevant Issuing Authority of the exporting country at the time exportation, or within 3 working days from the date of shipment, whenever the products to be exported can be considered originating in that country within the meaning of the rules of origin for the Scheme.

9. In exceptional cases where a certificate of origin has not been issued at the time of exportation or within 3 working days from the date of shipment due to involuntary errors or omissions or other valid causes, the certificate of origin may be issued retroactively but no longer than 45 days from the date of shipment, bearing the word "Issued Retroactively"

10. In the event of theft, loss or destruction of a certificate of origin, the exporter may apply in writing to the Issuing Authority which issued it for a certified true copy of the original and triplicate to be made on the basis of the export documents in their possession bearing the endorsement of the word "CERTIFIED TRUE COPY" (in lieu of the original certificate) in Box 12 of the certificate of origin. This copy shall bear the date of the original Certificate of origin. The certified true copy of a certificate of origin shall be issued within the validity period of the original Certificate of origin and on the condition that the exporter provides to the relevant Issuing Authority the quadruplicate copy. The validity of certified true copy of the certificate of origin would be the same as that of the original certificate so issued.

Presentation at the time of Importation

11. The original certificate of origin shall be submitted to the Customs Authorities at the time of lodging the import entry for the products concerned.

12. The following time limit for the presentation of the certificate be observed:

- a) The validity of the certificate of origin shall be twelve months from the date of its issuance.
- b) Certificate of origin must be submitted to the Customs Authority within the validity period.

13. Where the certificate of origin is submitted after the expiration of the validity of the certificate of origin, such certificate is still to be accepted when failure to observe the time limit results from *force majeure* or other valid reasons beyond the control of the exporter.

14. In all cases, the relevant Customs Authority in India may accept such certificate of origin provided that the products have been imported before the expiry of the validity of the certificate of origin.

15. The discovery of minor discrepancies between the statements made in the certificate of origin and those made in the documents submitted to the Customs Authority of India for the purpose of carrying out the formalities for clearance of import, the products shall not *ipso facto* invalidate the certificate of origin, if it does in fact correspond to the said products.

16. In cases where the Certificate of Origin is rejected by the Custom Authorities in India, the original Certificate of Origin shall be returned to the issuing authority within a reasonable period but not exceeding two (2) months. The grounds for denial of preferential tariff treatment shall be duly notified to the importer and the Issuing Authority.

Verification

17. The Customs Authorities of India may request a retroactive check at random and/or when it has reasonable doubt as to the authenticity of the document or as to the accuracy of the information regarding the true origin of the product in question or of certain parts thereof through designated nodal authority as per the procedure laid down under the said Duty Free Tariff Preference Scheme.

Special Cases

18. When destination of all or parts of all or parts of the products exported to specified port is changed, before or after their arrival in India, the following rules shall be observed:

- a) If the products have already been submitted to the Customs Authority in the specified importing port, the certificate of origin shall by a written application of the importer, be endorsed to this effect for all or parts of products by the said Authority and the original returned to the importer.
- b) If the changing of destination occurs during transportation to India as specified in the certificate of origin, the exporter shall apply in writing concerned Customs Authority, accompanied with the issued certificate of origin, for the new destination.

19. For the purpose of implementing the provisions of rule 7 of the Rules of Origin, the following shall be produced to the customs authority of India at the time of importation:

- a) a through Bill of Lading issued in the exporting country;
- b) a certificate of origin issued by the Issuing Authority of the exporting beneficiary country;
- c) a copy of the original commercial invoice in respect of the product; and
- d) supporting documents in evidence that other requirements of rule 7 have been complied with.
